RNI NO. : MPHIN33094

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

# चहकती चेतना

वर्ष : 16वां | अक्टूबर-दिसंबर 2023 अंक : 62वां

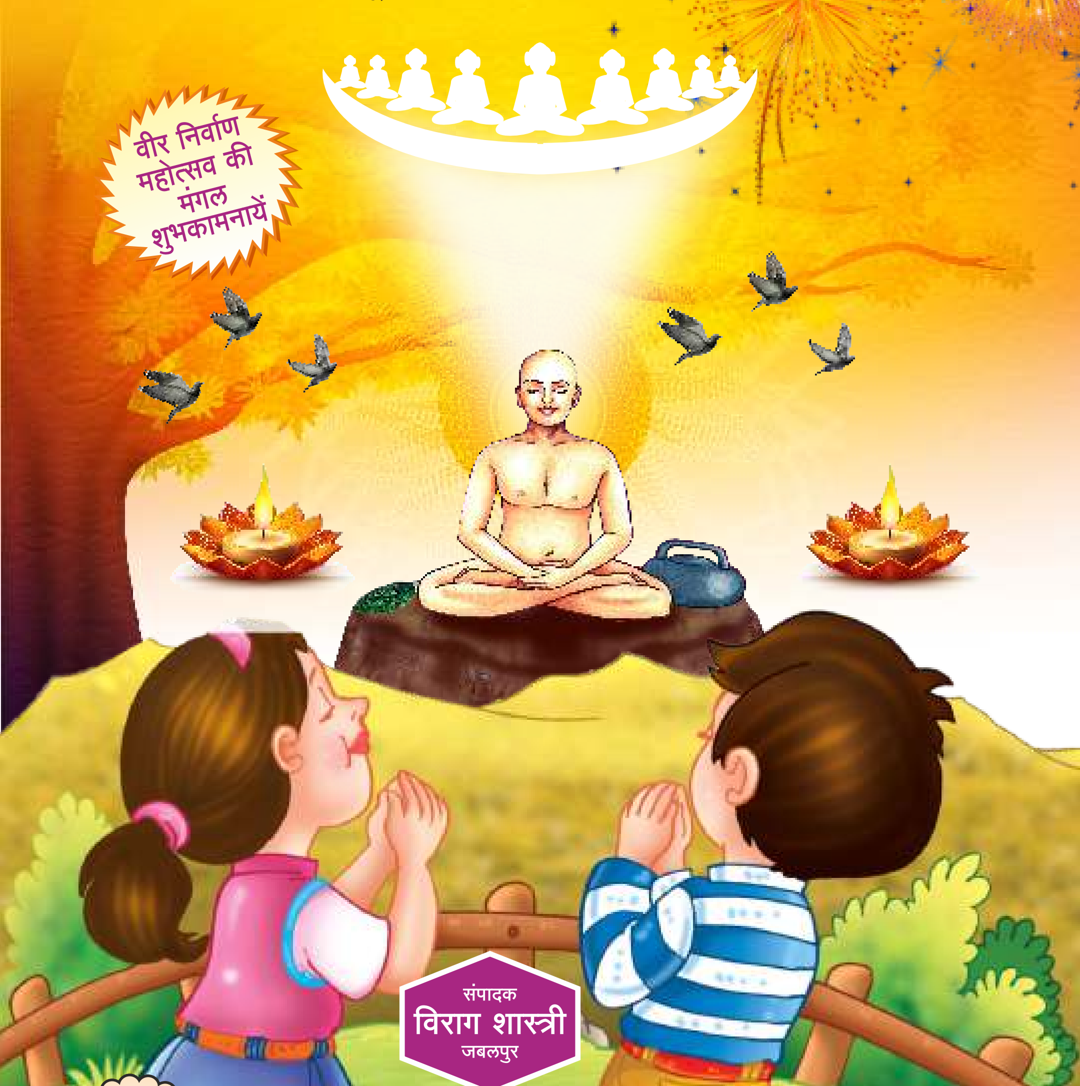


संपादक
विराग शास्त्री
जबलपुर

प्रकाशक - सूरज बेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुंबई
संस्थापक - आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन, जबलपुर (म.प्र.)

श्री कुन्दकुन्द-कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला, मुम्बई द्वारा शाश्वत तीर्थधाम, उदयपुर में आयोजित
जिन देशना
यूथ
कन्वेन्शन
8-9-10
सितंबर 2023

आध्यात्मिक, तात्विक, धार्मिक एवं नैतिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

# चहकती चेतना

प्रकाशक : श्रीमति सूरजबेन अमुलखराय सेठ स्मृति ट्रस्ट, मुम्बई
संस्थापक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाऊन्डेशन, जबलपुर म.प्र.
संपादक : विराग शास्त्री, जबलपुर
डिजाइन/ग्राफिक्स : गुरुदेव ग्राफिक्स, जबलपुर

परमशिरोमणि संरक्षक
- श्रीमती स्नेहलता धर्मपत्नि जैन बहादुर जैन, कानपुर
- डॉ. उज्जवला शहा-पंडित दिनेश शहा, मुम्बई
- श्री अजित प्रसाद जी जैन, दिल्ली,
- श्री मणिभाई कारिया, ग्रांट रोड, मुंबई
- कु. अनन्या सुपुत्री श्री विवेक जैन बहरीन

परम संरक्षक
- श्री अनंतराय ए.सेठ, मुम्बई, श्री प्रेमचंद बजाज, कोटा
- श्रीमति आरती पुष्पराज जैन, कन्नौज उ.प्र.
- श्री श्रेणिक विनयजी लुहाडिया, वर्ली, मुंबई
- श्रीमति भारती बेन - डॉ. विपिन भायाणी, अमेरिका

संरक्षक
- श्री आलोक जैन, कानपुर
- श्री सुनील भाई जे. शाह, भायंदर, मुम्बई
- Agraeta Technik P. Ltd., Virar, Thane MH.
- श्री निमित्त शाह, कनाडा
- श्री भरत भाई टिम्बड़िया, कोलकाता/ श्री कमलेश भाई टिम्बड़िया, राजकोट

परम सहायक :
- श्री प्रदीपजी चौधरी, किशनगढ़
- श्री सुरेश पाटोदी, कोलकाता

| | | |
|---|---|---|
| 1 | सूची | 1 |
| 2 | हमारा गौरवशाली इतिहास | 2 |
| 3 | बेमिसाल श्रद्धा | 3 |
| 4 | अहिंसा का मार्ग | 4 |
| 5 | पारिश्रमिक | 5 |
| 6 | संसार की विचित्रता | 6 |
| 7 | मोबाईल सिर के नीचे...... | 7-8 |
| 8 | चंद्रमा की यात्रा | 9-10 |
| 9 | जैनों का अतुलनीय रतन | 11 |
| 10 | भारत माता मंदिर | 12 |
| 11 | इनमें से कौन-कौन सी वस्तुयें दिग.मुनिराज.... | 13 |
| 12 | अब नहीं फोड़ूँगा | 14-15 |
| 13 | पटाखा पोस्टर | 16-17 |
| 14 | कथा सुनो पुराण की | 18-20 |
| 15 | एक जीवंत प्रेरणा | 21 |
| 16 | मुनिराज को समवशरण में पहुँचाइये | 22 |
| 17 | आपके प्रश्न आगम के उत्तर | 23 |
| 18 | विदेशों में जैन धर्म.... | 24-25 |
| 19 | नाम रखें सोच-समझकर | 26 |
| 20 | समाचार : चहकती-चेतना कलेन्डर विज्ञापन... | 27 |
| 21 | समाचार : ज्ञानोदय में यूथ कन्वेंशन | 28 |
| 22 | कविता : ये कैसा त्यौहार | 29 |
| 23 | प्लास्टिक का बढ़ता प्रयोग | 30-31 |
| 24 | कोई लाख करे चतुराई....... | 32 |

प्रकाशकीय व संपादकीय कार्यालय
''चहकती चेतना''
सर्वोदय, 702, जैन टेलीकॉम,
फूटाताल, लाल स्कूल के पास, जबलपुर म.प्र. 482002
9300642434, 7000104951
chehaktichetna@yahoo.com

चहकती चेतना के पूर्व प्रकाशित संपूर्ण अंक प्राप्त करने के लिये लॉग ऑन करें
**www.vitragvani.com**

मुद्रण व्यवस्था : स्वस्ति कम्प्यूटर्स, जबलपुर

**सदस्यता शुल्क - 500/- रू. (तीन वर्ष हेतु)**
**1500/- रू. (दस वर्ष हेतु )**

सदस्यता राशि अथवा सहयोग राशि आप ''चहकती चेतना'' के नाम से ड्राफ्ट/चैक/मनीआर्डर से भेज सकते हैं। आप यह राशि कोर बैंकिंग से ''चहकती चेतना'' के बचत खाते में जमा करके हमें सूचित सकते हैं।
पंजाब नेशनल बैंक, फुहारा चौक, जबलपुर
बचत खाता क्र.- 1937000101030106
IFS CODE : PUBN0193700

PAYTM no.: 9752756445 भी कर सकते हैं।

# हमारा गौरवशाली इतिहास

## चंदवाड़ या फिरोजाबाद....

उत्तरप्रदेश का एक प्रमुख नगर है - फिरोजाबाद। यहाँ कांच की चूड़ी की सैकड़ों फैक्ट्रियाँ होने से इसे चूड़ी नगर भी कहा जाता है। इस नगर में अनेक भव्य जिनमंदिर हैं। सदर बाजार के पास 300 वर्ष पुराने श्री चंद्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर का इतिहास काफी गौरवमयी है। इसमें विश्व सबसे बड़ी प्राचीन स्फटिक मणि की चंद्रप्रभ भगवान की प्रतिमा विराजमान है। फिरोजाबाद नगर बसने के पहले यह यमुना नदी के किनारे बसने वाला यह चंद्रवाड़ नाम का नगर था। यहाँ के राजा चंद्रसेन जैन धर्म के अनुयायी थी।इन्होंने चंदवाड़ में 51 जिनमंदिरों की प्रतिष्ठा करवाई थी। 14वीं सदी में मुगल शासक मुहम्मद गौरी की सेना ने चंद्रवाड़ पर हमला कर दिया और अनेक मंदिरों को नष्ट शुरु कर दिया तब राजा चंद्रसेन ने भगवान चंद्रप्रभ की प्रतिमा को बचाने के लिये उसे यमुना नदी में प्रवाहित कर दिया। कई वर्ष बाद एक माली को स्वप्न आया कि यमुना में भगवान चंद्रप्रभ की प्रतिमा है। उसने इस स्वप्न की जानकारी समाज को दी। समाज वाले नदी के पास पहुँचे परन्तु इतनी बड़ी नदी में प्रतिमा खोजना बहुत कठिन था तो प्रतिमा नहीं ढूँढ पाये। अगली बाद माली को फिर स्वप्न आया कि नदी में फूल डालो, जहाँ फूल ठहर जायें वहीं भगवान की प्रतिमा मिलेगी।

समाज के लोगों ने एक टोकरी भरकर फूल यमुना नदी में प्रवाहित कर दिये, कुछ देर बाद सारे फूल पानी में ही एक स्थान पर एकत्रित हो गये और उस स्थान पर पानी कम हो गया। इसके बाद वह प्रतिमा पानी से निकालकर जिनमंदिर में स्थापित करवाई गई। ऐसा भी कहा जाता है लंकापति रावण इस प्रतिमा की पूजा करता था और चंदवाड़ के राजा इस प्रतिमा को लंका से लेकर आये थे और यहाँ विराजमान किया था।

## सच्चा मित्र

**गिरौ मयूरा गगने पयोदा, लक्षान्तरेर्कश्च जलेषु पद्मम् ।**
**इन्दुर्द्विलक्षं कुमुदस्य बन्धुयो यस्य मित्रं नहि तस्य दूरम् ।।**

मयूर पर्वत पर होते हैं और बादल आकाश में होते हैं फिर भी बादल को देखकर मयूर नाचता है। सूर्य धरती से लाखों मील दूर होता है फिर भी कमल सूर्य को देखकर खिलता है, सच में जो जिसका मित्र होता है, वह उससे कितना भी दूर क्यों न हो, वह हृदय से उसके पास ही होता है।

# बेमिसाल श्रद्धा

मुनि अजितसेनजी पोदनपुर में भरत चक्रवर्ती के द्वारा निर्माण कराई गई विशाल बाहुबली की प्रतिमा की विशेषता का वर्णन कर रहे थे। तब सेनापति चामुण्डराय की माता कलालादेवी के मन में उस प्रतिमा के दर्शन की तीव्र इच्छा हुई। उन्होंन नियम लिया कि जब तक प्रतिमा के दर्शन नहीं होंगे तब तक छहों रसों का त्याग होगा अर्थात् उन्होंने नीरस भोजन करने का नियम ले लिया। जब उनके पुत्र वीर चामुण्डराय को यह पता चला कि माँ ने भगवान बाहुबली भगवान की प्रतिमा के दर्शन के बाद ही सरस भोजन करने का नियम लिया है तो उन्होंने अपने सेना के साथियों के साथ पोदनपुर चलने की तैयारी कर ली परन्तु सेनापति के गुरु आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने बताया कि पोदनपुर पहुँचने का मार्ग बहुत कठिन और सांपों से भरा हुआ है। वहाँ जाना असंभव जैसा ही है परन्तु चामुण्डराय को अपनी माँ की प्रतिज्ञा पूरी करने की चिंता थी। तभी आचार्य नेमिचंदजी ने कहा - सेनापति! तुम अपने धनुष से पूर्व दिशा की तीर छोड़ो, जहाँ पर तीर लगेगा वहीं पर तुम्हें भगवान बाहुबली भगवान के दर्शन हों जायेंगे। गुरु का संकेत पाकर चामुण्डराय ने विंध्यगिरि पर्वत की ओर एक तीर छोड़ा तो वह तीर एक विशाल शिला से जाकर टकराया। वहाँ पहुँचने के बाद प्रतिमा न पाकर चामुण्डराय निराश हो गये। आचार्यश्री ने कहा - सेनापति! इस शिला के अतिरिक्त भाग को अलग कर दो, तुम्हें भगवान बाहुबली भगवान के दर्शन हो जायेंगे।

चामुण्डराय के आदेश पर शिल्पियों ने उस पत्थर को तराशना प्रारंभ कर दिया और उस शिला से भगवान बाहुबली की बिना सहारे की 57 फुट ऊंची अत्यंत सुन्दर प्रतिमा बनकर तैयार हो गई। माता कलाला देवी की भक्ति और प्रतिज्ञा पूर्ण हुई।

हजारों साल बाद भी वह विशाल प्रतिमा पूरे विश्व के आकर्षण के केन्द्र के साथ आस्था का केन्द्र बनी हुई है। एक पाश्चात्य शिल्पी ने इस प्रतिमा को देखकर कहा कि इस प्रतिमा में इतनी बड़ी राशि व्यय हुई होगी उससे कम मूल्य में तो सोने की इतनी बड़ी प्रतिमा बन जाती।

# अहिंसा का मार्ग

बिलासपुर नगर में निशांत नाम का एक राजा रहता था। वह अत्यन्त हिंसक व क्रूर था। एक दिन वह शिकार हेतु वन में गया। उसने वहाँ कुछ पशुओं को बाण से मार डाला। खून से लथपथ उनके शरीर को वह कन्धों पर लटकाकर लौटने लगा। परन्तु वह उस घने जंगल में से निकलने का मार्ग भूल गया, उसकी सेना के सदस्य उससे बिछड़ गया वह अकेला ही इधर-उधर से चल-चलकर परेशान होता रहा परन्तु उसे बाहर निकलने का मार्ग नहीं मिला वह थककर एक जगह बैठ गया।

तभी उसने देखा कि सामने एक विशाल पत्थर पर एक मुनिराज ध्यान मुद्रा में बैठे हैं उसे एक आशा जगी कि ये मुनिराज बाहर निकलने का मार्ग बता देंगे। उसने मुनिराज के पास जाकर मार्ग बताने का निवेदन किया। बार-बार निवेदन करने पर मुनिराज का ध्यान भंग हो गया और उन्होंने जैसे ही आंखे खोलीं तो सामने खून से लथपथ जानवरों को कंधे पर रखे हुये व्यक्ति को देखकर उनका मन अशांत हो गया और उन्होंने फिर आंखें बंद कर लीं। तभी राजा ने फिर कहा - मुझे मार्ग तो बता दीजिये।

उसके स्वर में बहुत दीनता आ गई, वह बुरी तरह फंस गया था। इतना परेशान होने के बाद एक व्यक्ति मुश्किल से मिला था अब यदि इन्होंने मार्ग नहीं बताया तो इस जंगल में ही मर जाऊँगा। उसने फिर निवेदन किया परन्तु मुनिराज को ऐसे क्रूर परिणामी से कुछ बोलने का भाव नहीं आ रहा था कुछ समय बाद उन्होंने उस शिकारी राजा से कहा -

**जीव वद्धंता नरक गइ, अवद्धंता सग्ग।**
**मैं जाणू बे बाटणी, जिहँ इच्छा तिहँ गच्छ।।**

अर्थात् हे आर्य ! जीव वध करने से नरक का मार्ग प्राप्त होता है और जीव दया से स्वर्ग का मार्ग प्राप्त होता है। मैं तो बस ये दो मार्ग जानता हूँ, तुम्हें इन दोनों में से जो अच्छा लगे उसी मार्ग पर चले जाओ।

राजा की होनहार अच्छी थी। उसे मुनिराज की यह बात बहुत शांतिदायक लगी और उसके निवेदन पर मुनिराज ने विस्तार से समझाया तो उसने सदा के लिये हिंसा का मार्ग छोड़कर अहिंसा का मार्ग अपना लिया।

तभी राजा के सैनिक राजा को ढूँढते हुये वहाँ आ गये और राजा को सुरक्षित जंगल के बाहर ले गये परन्तु अब राजा क्रूर राजा नहीं था बल्कि दयालु राजा था। उसकी आंखों में प्रायश्चित के आंसू थे।

**- प्रो. वीरसागर जैन, दिल्ली**

# पारिश्रमिक

कलाकार शिल्पी चागद ने गोम्मटेश्वर की मूर्ति बनाई तो उसे निर्माण के पारिश्रमिक के रूप में लाखों स्वर्ण मुद्रायें प्राप्त हुईं। स्वर्ण मुद्रा पाकर वह प्रसन्नता से अपने घर पहुँचा तो चागद की माँ ने स्वर्ण मुद्रायें देखकर कहा - सेनापति चामुण्डराय ने अपनी माँ की प्रेरणा से भक्ति के कारण अपार धन खर्च करके भगवान की प्रतिमा बनवाई और एक तुम हो जो भगवान बेच रहे हो। तुम जैसा हीन व्यक्ति कौन कोई नहीं हो सकता। माँ के व्यंग्य भरे वचन सुनकर चागद को बहुत शर्मिंदगी हुई, वह स्वर्ण मुद्रायें लेकर सेनापति के पास वापस पहुँचा और उन्हें स्वर्ण मुद्रायें वापस करते हुये कहा कि हे सेनापति ! बाहुबली भगवान की प्रतिमा बनाते समय उनकी वीतराग मुद्रा मेरे मन में भी बस गई है, यही मूल्य मेरे बहुत है। इन जड़ स्वर्ण मुद्राओं के पारिश्रमिक की मुझे आवश्यकता नहीं है, कृपया इसे वापस स्वीकार करें।

चामुण्डराय के बहुत समझाने पर भी चागद ने स्वर्ण मुद्रायें वापस नहीं लीं।

## रात्रि भोजन त्यागकर बने भगवान राम

भरत क्षेत्र में एक धनदत्त नाम का व्यापारी रहता था। एक बार वह धनदत्त कहीं जा रहा था, चलते-चलते वह बहुत थक गया। वह एक आश्रम में पहुँचा तब तक रात्रि हो चुकी थी उसने एक साधु को देखा तो उनसे कहा - स्वामीजी ! मैं बहुत प्यासा हूँ। आप बहुत नेक कार्य करते हैं, दयालु हैं, मैं बहुत प्यासा हूँ, कृपया करके पानी पिला दें।

उन साधु ने कहा - हे वत्स ! रात्रि में अमृत पीना भी उचित नहीं है तो फिर पानी की क्या बात है रात्रि में सूक्ष्म जीव चारों ओर घूमते हैं और इस समय आंख भी उन्हें भी देख नहीं सकती ऐसे अंधकार में रात्रि के समय तुम भोजन-पानी मत करो। हे बंधु ! यदि तुझे कष्ट होवे तो भी रात्रि में भोजन नहीं करना चाहिये। रात्रि में भोजन का भाव करके दुख से भरे हुये संसार समुद्र में मत पड़।

धर्मात्मा साधु की अमृतमयी वाणी सुनकर धनदत्त का मन शांत हो गया और प्रसन्नता से उसके मन में दया का भाव आगया। उसी समय उसने रात्रि भोजन छोड़ने का निर्णय कर लिया। उसके परिणाम बहुत निर्मल हो गये। उस धनदत्त के जीव ने नियम पूर्वक देह छोड़ दी और वह मरकर स्वर्ग में देव हुआ।

यही धनदत्त का जीव आगामी भवों में भगवान राम बने।

# संसार की विचित्रता

एक बहुत सुन्दर भवन था। इस भवन के नीचे वाले हिस्से में अनाज की दुकान थी, कुछ अनाज की बोरियाँ दुकान के बाहर भी लगीं हुईं थीं तभी एक बछड़ा आया और उसने अनाज की बोरी में मुंह लगाया तो दुकान मालिक ने अपने नौकर ने कहा - इसे मारकर दूर भगाओ और स्वयं भी एक नुकीली छड़ी फेंककर उस बछड़े को मार दी। नौकर ने भी उस बछड़े का पीछा करके मारते हुये दूर तक भगा दिया।

उसी समय एक अवधिज्ञानी मुनिराज जा रहे थे। बछड़े को पिटता देखकर मुनिराज को हल्की सी मुस्कराहट आ गई तभी एक श्रावक ने पूछा - मुनिवर! इस समय आपको हंसी आने का क्या कारण है ? तब मुनिवर ने बताया - यह अनाज की दुकान पहले बहुत छोटी थी। इसके मालिक ने इसी दुकान से अपने व्यापार को बढ़ाया और बहुत धनी हो गया। अपना बड़ा सा भवन बनाया, अनाज की छोटी दुकान से बड़ी दुकान हो गई। व्यापार के कारण वह जीवन भर धर्म से दूर रहा और धन संग्रह करते-करते मर गया। उसके मरने के बाद उसका बेटा सोमदत्त ने उसका व्यापार संभाल लिया।

वही बेटा सोमदत्त इस दुकान पर बैठा है और सोमदत्त ने जिस बछड़े को मारकर भगाया है। वह सोमदत्त का पिता था और मरकर गाय का पुत्र बन गया। इस बछड़े को जातिस्मरण हो गया है और यह पूर्व भव के राग के कारण प्रतिदिन इस अनाज की दुकान पर आता है। इस दुकान का काम तो नौकर देखते हैं, आज इसके मालिक के सामने यह बछड़ा आ गया। मुझे इस बात का स्मरण हुआ कि सोमदत्त के पिता ने पूरे जीवन धर्म को भूलकर अपना सारा समय धन कमाने में लगा दिया और आज एक मुट्ठी भर अनाज के लिये उसकी पिटाई हो गई। अनाज की ओर मुंह करते ही उसे मार पड़ती है और जिस पुत्र को बड़े प्यार से पाला वही निर्दयी होकर मारता है। यही है संसार की विचित्रता।

# मोबाइल सिर के नीचे रखकर सोने वाले सावधान...

आजकल एप्पल हो या कोई एंड्रायड फोन लगभग सभी कम्पनियों के मोबाइल के साथ होने वाली अनेक घटनायें सामने आ रहीं हैं। कभी किसी के पेंट में रखे फोन में अपने आप आग लग गई, या गेम खेलते-खेलते अचानक उसमें ब्लास्ट हो गया या बात करते हुये फोन फट गया। आखिर इस तरह की घटनायें आखिर क्यों हो रहीं हैं ?

कुछ दिनों पहले ही आईफोन वाली कम्पनी एप्पल ने वार्निंग भी जारी की है और कम्पनी ने लोगों को फोन चार्ज करने का सही तरीका बताकर भविष्य में होने वाले खतरे से अलर्ट किया है।

मुम्बई के आईटी एक्सपर्ट मंगलेश एलिया के अनुसार बैटरी की वजह से ज्यादातर मोबाइल फोन फटते हैं। बैटरी के फटने का सबसे बड़ा कारण हीट यानी गर्मी है। यूजर्स की गलतियों के की वजह से बैटरी ओवरहीट होकर फट जाती है। जैसे - लगातार 8-10 घंटे तक चार्ज करना, गर्म जगह पर घंटों तक मोबाइल रखना, बैटरी गर्म होकर फूल जाना या उसमें कोई गड़बड़ी होना। कुछ संकेतों से हम समझ सकते हैं कि मोबाइल की बैटरी खराब हो रही है।

1. फोन का गर्म होना।
2. स्क्रीन का ब्लर होना।
3. बिना टच किये फोन की स्क्रीन चलना।
4. स्क्रीन में पूरी तरह डार्कनेस आना।
5. फोन बार - बार हेंग होना और प्रोसेसिंग स्लो होना।
6. बात करते समय फोन नार्मल से ज्यादा गर्म होना।

**विशेष ध्यान दें -**

1. चार्जिंग के समय मोबाइल के आसपास रेडिएशन हाई रहता है। इस वजह से बैटरी गर्म हो जाती है। अगर इस स्थिति में कोई मोबाइल पर बात करें, गेम खेलें या सोशल मीडिया चलाये तो बैटरी फटने की संभावना बढ़ जाती है।
2. रात भर मोबाइल चार्ज न करें इससे मोबाइल की बैटरी खराब हो जाती है।
3. फोन को सिर के पास रखकर न सोयें। मोबाइल से रेडियो फ्रिक्वेंसी निकलती है, जो

आपके मेटाबॉलिज्म और खानपान पर बुरा असर डाल सकती है। फोन से निकलने वाले रेडिएशन से कैंसर और ट्यूमर जैसी घातक बीमारियाँ होने का खतरा रहता है।

4. सस्ते चार्जर का प्रयोग न करें।

5. धन के लोभ में अपने घर की छत या आंगन में मोबाइल टॉवर न लगवायें। यदि आपके पड़ोस में मोबाइल टॉवर लग रहा हो तो उसे रोकें। कानून के अनुसार आवासीय बस्ती में मोबाइल टॉवर लगाना अवैध है और आसपास के लोगों की आपत्ति होने पर मोबाइल टॉवर नहीं लगाया जा सकता और यदि लग गया है तो कलेक्टर के पास शिकायत करके इसे अलग भी करवाया जा सकता है।

## हमारी जीवंत विरासत

उम्र 94 वर्ष। अभी भी प्रतिदिन जिनमंदिर जाकर शुद्ध वस्त्र पहनकर जिनेन्द्र भगवान का अभिषेक पूजन और प्रतिदिन लगभग 5 से 6 घंटे का स्वाध्याय। पूरे जीवन में लगभग 200 दिगम्बर जैन शास्त्रों का स्वाध्याय। कई ग्रन्थों का पठन कई बार किया। पिछले 60 वर्षों से रात्रि में पानी का भी त्याग। ये विशेषतायें हैं सागर निवासी श्री रतनचंदजी जैन की। देश के लगभग सभी प्रमुख तीर्थों की वंदना कर चुके श्री रतनचंदजी इस उम्र में भी उत्साहित हैं। उनकी प्रेरणा से पूरा परिवार देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पित है और जिनशासन की प्रभावना में अपना योगदान देता है। बड़े सुपुत्र पण्डित निर्मलकुमारजी गहरे अभ्यासी विद्वान हैं एक पुत्री पिछले 38 वर्षों से ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सोनगढ़ में आराधना कर रहीं हैं।

चहकती चेतना परिवार ऐसे उत्साही जिनशासन सेवक श्री रतनचंदजी के दीर्घायु की मंगल कामना करता है।

# चन्द्रमा की यात्रा

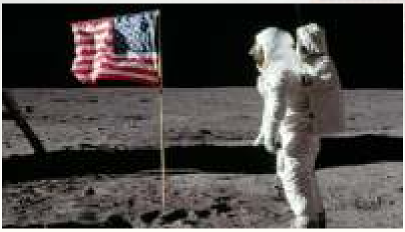

पिछले 23 अगस्त को पूरे विश्व में एक घटना चर्चा का विषय बनी रही। भारत के चन्द्रयान -3 का चन्द्रमा पर सफल लैंडिंग हुई और चांद पर पहुँचने वाला भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद चौथा देश बन गया और चांद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचने वाला विश्व का पहला देश बन गया। प्रत्येक देशवासी भारत की इस उपलब्धि पर गर्व महसूस कर रहा है लेकिन यह बात विचार करने योग्य है कि जिस स्थान पर चन्द्रयान उतरा वह चांद है या नहीं और क्या जैन दर्शन के अनुसार वह चांद पर मानवों का जाना संभव है ?

जैन दर्शन के अनुसार चन्द्रमा ज्योतिषी देवों का विमान है। इसमें ज्योतिषी जाति के असंख्य देव रहते हैं और इस विमान में असंख्यात जिनमंदिर मंदिर हैं। यहाँ मनुष्यों का जाना असंभव है।

ज्योतिषी देवों का निवास मध्यलोक के धरातल से 790 योजन की ऊँचाई से लेकर 900 योजन तक आकाश में है।

सबसे नीचे तारे हैं, उनसे 10 योजन ऊपर सूर्य है, सूर्य से 80 योजन ऊपर चन्द्रमा है, चन्द्रमा से चार योजन ऊपर 27 नक्षत्र हैं, नक्षत्रों से 4 योजन ऊपर बुध ग्रह, उससे 3 योजन ऊपर शुक्र, उससे 3 योजन ऊपर बृहस्पति, उससे 3 योजन ऊपर मंगल और उससे 3 योजन शनि है। इस प्रकार पृथ्वी से ऊपर 900 तक ज्योतिषी मण्डल है।

2000 कोस का एक योजन होता है। इस नाप के अनुसार पृथ्वी से चन्द्रमा 3520000 मील की दूरी पर है। यह समस्त चर्चा वीतरागी सर्वज्ञ भगवान देव द्वारा कही गई है।

**अब विज्ञान के तथ्य समझते हैं -**

रूस और अमेरिका में वैज्ञानिक अलग-अलग मत से पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी 7 लाख, 13 लाख और 22 लाख मील मानते हैं और फ्रांस और जर्मनी में पृथ्वी और चन्द्रमा की दूरी 5 लाख, 13 लाख और 21 लाख मानने वाले वैज्ञानिक हैं। मतलब दूरी के संदर्भ में वैज्ञानिकों का एक विचार नहीं है।

रूस सोवियत संघ ने चन्द्रमा पर सबसे पहले 1966 में जो राकेट भेजा वह 12000 मील प्रतिघंटा की गति से भेजा और उसे चन्द्रमा पर पहुँचने में 34 घंटे लगे। इसके अनुसार कुल दूरी 4 लाख 8000 मील हुई जबकि अमेरिका के भेजे गये राकेट की गति 6000 मील प्रति घंटा थी जो कि 76 घंटे में चन्द्रमा पर पहुँचा, इस प्रकार यह दूरी 4 लाख 2000 मील हुई। अब इन दोनों में किसे सच माना जाये क्योंकि एक मील का भी अंतर हो तो राकेट जल जायेगा और यहाँ तो 6000 मील का अंतर है।

स्कूल की पाठ्यपुस्तकों में चन्द्रमा की दूरी 2 लाख 38 हजार मील बताई जाती है। सभी की गणना में बहुत अंतर है।

हम सबने पढ़ा है कि चन्द्रमा पर इतनी प्रचण्ड गर्मी है कि वहाँ पर काँच गर्मी से पिघल जाये। वहाँ पर बारिश नहीं होती। लावा भी उबलकर एकदम सूख गया है।
इसके बाद अमेरिका से चन्द्रमा पर जाने वाले यात्री नील आर्मस्ट्रांग ने कहा कि चन्द्रमा पर गीली मिट्टी गीली है और मेरे जूते छः इंच धस गये। इन दोनों में से कौनसी बात सच मानी जाये। 1969 में अमेरिका की चन्द्रमा यात्रा के संदर्भ में गुजरात समाचार 24 अगस्त 1969 को चंद्रमा और उसके यात्रियों का एक फोटो प्रकाशित किया। दोनों यात्रियों के बीच में अमेरिका का झण्डा है। जमीन पर दोनों यात्रियों की परछाईं है परन्तु झंडे और उसके डंडे की परछाईं नहीं है। इससे सिद्ध होता है कि यह चित्र नकली है। ये भी कहा जाता है कि चांद पर प्रकाश ही नहीं तो छाया होने का प्रश्न ही नहीं है। विज्ञान यह कहता है कि चन्द्रमा पर वायुमण्डल नहीं है तो चन्द्रमा पर मौजूद तारे साफ दिखाई देने चाहिये पर फोटो में पीछे पूरा आकाश काला है और बिना वायु के झंडा कैसे लहरा रहा है। अमेरिका के नौसेना अधिकारी ने नासा के टीम के सदस्य बिल केसिंग की पुस्तक का प्रकाशन किया है, जिसमें कई तर्क देकर बताया गया है कि अमेरिका चांद पर गया ही नहीं।

यह भी कहा गया कि अपोलो मिशन एक फिल्म की तरह था, जिसे हॉलीवुड डायरेक्टर स्टैनले क्यूब्रेक ने फिल्माया था।

इसका एक समाधान इस प्रकार माना जा सकता है कि जैन धर्म के अनुसार अभी हुण्डावसर्पिणी काल चल रहा है। इसमें कुछ ऐसी घटनायें भी होतीं जो सामान्य तौर पर नहीं होना चाहिये। भोगभूमि में पर्वत और समुद्र नहीं होते। तीसरे काल के बाद अर्थात् भोगभूमि समाप्त होने के बाद जब कर्म भूमि प्रारंभ हुई तब एक भयंकर भूकंप आया तब धरती एक योजन ऊपर उठ गई तब अनेक पर्वत और समुद्र बन गये और वर्तमान में जो चंद्रमा पर गये तो हो सकता है वे उसी समय के बने किसी पर्वत पर पहुँच गये हों, जिसे आज का विज्ञान चंद्रमा कहता है।

सारी बातें छोड़कर हमें देश की उपलब्धि पर गर्व करना चाहिये और सर्वज्ञ भगवान द्वारा वर्णन किया गया जैन भूगोल ही पूर्ण सत्य है, यह श्रद्धा और विश्वास अटल रखना चाहिये।

# Jaino Ka Atulniya Ratna :

## Shree Virchand Raghavji Gandhi

## 185 – Atul Bafna

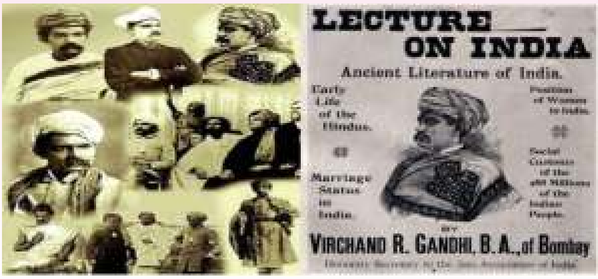


August is month dedicated to Forgotten Indian Patriot Shree Virchand Raghavji Gandhi (VRG -August 25, 1864 — August 7, 1901), who captivated 1893s' first ever world religion of parliament organized in Chicago.

VRG's immense success was covered by the following list of leading US newspapers, and periodicals like New York Times, St. Joseph Gazette, The Jamestown New York, Editors Bureau, Chicago Daily Sun, Chicago Herald, Chicago Suburban Star, Light of Truth, Cincinnati, Buffalo Times, The Illustrated Buffalo Express, Morning Star, Buffalo Evening Times, Buffalo Express, Buffalo Courier, The Evangelist, Evening Post, Rochester Democrat Chronicle, and The Rochester Herald, was appreciated.

At all the places he was well listened, felicitated and presented with medals. He knew 14 languages and was great scholar in teachings of all world religions and was first In world to translate Unknown Life of Jesus Christ from French to English, a manuscript found from Tibet. He talked about economic and political freedom five decades before India became independent. In one of his speeches to the American public, he declared: "You know, my brothers and sisters that we are not an independent nation, we are subjects of Her Gracious Majesty, Queen Victoria, the "Defender of the Faith." But if we were a nation in all that that word implies, with our own government and our own rulers, with our laws and institutions controlled by us free and independent, I affirm that we should seek to establish and for ever maintain peaceful relations with all nations of the world.

When Virchand Gandhi heard the news of severe drought of India in 1896 while he was in America, he at once established a Relief Committee under the President ship of Mr. C.C. Boney the President of Parliament of Religions, himself being the secretary. He sent a shipload of foodgrains and Rs. 40,000 as cash as a relief measure for the suffering people in India

**Kindly do share with all your JAIN groups & friends & even let them know how vast and old our JAIN religion is which was spread all over the world. History is never ending, its endlessssss**

हमारा गौरवशाली इतिहास -

# भारत माता मंदिर
## दौलताबाद

दौलताबाद भारत के महाराष्ट्र में औरंगाबाद से लगभग 16 किलोमीटर दूरी पर एक शहर है। यहाँ पहाड़ी पर 14वीं शताब्दी का एक किला है। पिरामिड के आकार का यह पर्वत यह स्थान कभी देवगिरि के नाम से जाना जाता था। यह किला महाराष्ट्र के सबसे शानदार के किलों में से एक है। यहाँ हर वर्ष लाखों लोग घूमने के लिये आते हैं।

अलाउद्दीन खिलजी ने आक्रमण कर इस पर कब्जा किया और सन् 1327 से 1351 तक यह तुगलक राजाओं की राजधानी बना रहा। मूलतः यह एक जैन मंदिर था। यहाँ पहले 52 स्तंभ थे जिनमें जैन मंदिर की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। अंदर छत के नीचे 152 पत्थर के खंभे थे। इसे मुस्लिम शासक अलाउद्दीन खिलजी ने जबरन कब्जा कर मस्जिद में परिवर्तित कर दिया और इसे 700 वर्षों तक जामा मस्जिद भी कहा जाता रहा। यहाँ 110 फुट ऊंची एक चांद मीनार है जो कि दिल्ली की कुतुबमीनार के बाद देश की सबसे ऊंची मीनार है।

भारत की आजादी के बाद 1948 में भारत सरकार ने इस किले का भी अधिग्रहण किया। देश के प्रथम गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल और कन्हैयालाल मुंशी जैसे बड़े नेताओं को पता था कि यह जैन मंदिर है परन्तु साम्प्रदायिक सद्भाव और धार्मिक रंग से बचने के लिये इसमें भारत माता की प्रतिमा की स्थापना कर दी गई। इस मंदिर के जैन मंदिर होने के अनेक प्रमाण हैं। इस बात को भारतीय पुरातत्व विभाग ने भी लिखित रूप में स्वीकार किया है।

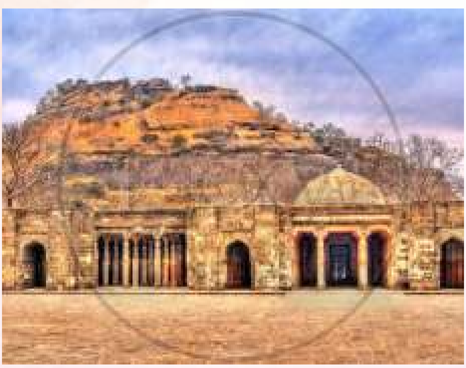

## इनमें से कौन-कौन सी वस्तुयें

# दिगम्बर मुनिराज के पास होती हैं

### निशान लगाइये ☑

लघु नाटिका -

# अब नहीं फोड़ूँगा

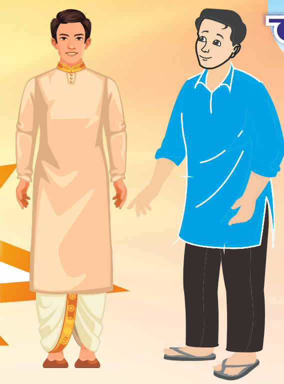

**सम्यक् -** अरे सम्यक् भाई! सुबह सुबह कहाँ चल दिये ?

**उत्सव -** क्या बताऊँ सम्यक्! मेरा बेटा दीप कल से पटाखे खरीदने की जिद कर रहा है है। कल शाम से उसने भोजन भी नहीं किया।

**सम्यक् -** अरे यह क्या बात हुई उत्सव! तुमने उसे समझाया नहीं...

**उत्सव-** (बीच में टोककर) अरे भाई! कितना समझाया लेकिन वह मानता ही नहीं

**सम्यक् -** तो फिर तुमने क्या सोचा? क्या तुम इतने समझदार होकर भी उसे पटाखे लाकर दोगे क्या ?

**उत्सव् -** तो फिर क्या करूँ ? मन तो नहीं मानता, लेकिन सम्यक् ने कल से भोजन नहीं किया।

**सम्यक् -** आजकल के बच्चे तो बस इनकी सारी जिद पूरी करो और जब बड़े हो जायेंगे तो कहेंगे कि आपने हमारे लिये किया ही क्या ? तुम रुको मैं समझाकर देखता हूँ।

**सम्यक् -** (घर पहुँचकर) अरे दीप बेटे! क्या कर रहे हो?

**दीप -** बस अंकल! बोर हो रहा हूँ, आइये न अंकल! बैठ्ठिये।

**सम्यक् -** तो चलो, मैं तुम्हारा टाइम पास करने के लिये तुम्हें जादू दिखाता हूँ।

**दीप -** कैसा जादू अंकल?

**सम्यक् -** बेटा! मैं जलती हुई मोमबत्ती के ऊपर तुम्हारा हाथ रखूँगा और तुम्हारा हाथ जलेगा नहीं।

**दीप -** अंकल! ऐसा कैसे हो सकता है मैं अपना हाथ मोमबत्ती पर नहीं रखूँगा।

**सम्यक् -** क्यों बेटा?

**दीप -** मैं जल जाऊँगा न....।

**सम्यक् -** वाह बेटा! तुम्हें अपने जलने का तो डर है परन्तु उन छोटे-छोटे जीवों को जलाकर मार डालना चाहते हो

**दीप -** मैं कुछ समझा नहीं अंकल....।

**सम्यक् -** अरे! तुमने अपने पापा से पटाखे लाने की जिद की है न और तुमने कल से भोजन भी नहीं किया।

**दीप -** हाँ! कहा था। पर मैं दीपावली का पर्व एन्जॉय करना चाहता हूँ। मेरे सारे दोस्त पटाखे लाये हैं।

**सम्यक् -** किसी की हत्या करके एन्जॉय करना चाहते हो। तुम्हारे थोड़े से आनंद के लिये जलाये गये पटाखों की आग और आवाज असंख्यात जीवों की मौत बनकर आयेगी और क्या यदि तुम्हारे दोस्त चोरी करेंगे तो क्या तुम भी चोरी करोगे?

**दीप -** नहीं अंकल! लेकिन दीपावली का पर्व तो हमारे भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव है तो क्या हम खुशियाँ भी न मनायें ...?

**सम्यक् -** मैंने कब मना किया लेकिन दूसरे तरीके से। जैसे गौतम गणधर ने दीपावली मनाई थी। मतलब हम इस दिन भगवान महावीर की पूजन करें, उनकी शिक्षाओं का अध्ययन करें। तुम्हारा नाम तो दीप है। ऐसा कार्य मत करो कि दूसरे जीवों के जीवन में अंधेरा हो बल्कि प्रकाश हो। तुम्हारा पटाखों का आनंद अनंत निर्दोष जीवों की मौत का कारण क्यों बनें अच्छा यह बताओ कि पटाखे फोड़ने से कौनसा लाभ है ?

**दीप -** (कुछ देर सोचकर) कुछ भी नहीं...।

**सम्यक् -** जिस कार्य में कोई लाभ नहीं हो तो ऐसा कार्य क्यों करना और जिस काम में हानि ही हानि हो वह काम तो काम कभी नहीं करना। पटाखों से जीवों की हिंसा के साथ लोग जल जाते हैं, घरों में आग लग जाती है, बच्चे-बड़े अपंग हो जाते हैं और ... अरबों रुपयों का सामान जलकर राख बन जाता है।

**दीप -** बस बस अंकल! मैं समझ गया। अब मैं पटाखे कभी नहीं फोड़ूँगा।

**सम्यक् -** वाह ये हुई न बात। अब हम ज्ञान की दीपावली मनायेंगे।

# क्या पटाखे फोड़कर आप अहिंसा क

# क्या पटाखे फोड़कर आप मान

## जरा सोचिये –

# पटाखे फोड़ने से क्या मिला?

अतः जियो और जीने दो का अमर संदेश देने वाले भगवान महावीर के निर्वाण दिवस प
पालन कीजिये। सुख-शांति के पर्व दीपावली एवं अन्य जीवों के यमराज न बनें।

- क्षणिक मनोरंजन के लिये अनंत जीवों की हत्या क्यों?
- हमें बम विस्फोट में मरने वाले व्यक्तियों से सहानुभूति होती है तो फिर अनंत जीवों को पटाखों रुपी बम विस्फोट से मारने जैसी निर्दयता क्यों?
- हमें तो अग्नि की आंच भी सहन नहीं होती और हम निर्दोष जीवों को जला डालते हैं, छोटी सी आवास से बच्चे डर जाते हैं तो बम के धमाकों से अनंत जीवों को मौत के घाट उतरते देख कर हमारे हाथ क्यों नहीं कांपते ?

धार्मिक बाल त्रैमासिक पत्रिका

## चहकती चे

प्रकाशक : आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्

कृपया इस पोस्टर को उचित स्थान पर ल

# व दया धर्म का पालन कर पायेंगे ?
# जवता को कायम रख पायेंगे ?

भगवान एवं संतों की वाणी का अपमान

शारीरिक क्षति एवं जनहानि

वायु प्रदूषण की अधिकता

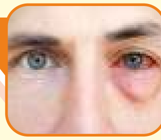

आँखों एवं स्वास्थ्य पर बुरा असर

करोड़ों की सम्पत्ति का नुकसान

अनंत पाप का बंध

गंदगी का साम्राज्य

धन की बर्बादी

अनंत निर्दोष जीवों की हत्या

समय की बर्बादी

पर हिंसा का तांडव मत करिये, राम,बुद्ध,नानक एवं संतों–महापुरुषों के अहिंसा संदेश का

## यह हिंसा के यमराज नहीं,
## अहिंसा के सम्राट के निर्वाण का महापर्व है।

**जरा सोचिये :** प्रतिवर्ष पटाखों से 2 लाख लोग अपंग, पटाखों की आग से देश में प्रतिवर्ष 200 करोड़ की सम्पत्ति का नुकसान, पटाखों से प्रतिवर्ष 70,000 बच्चों की आंखों की रोशनी कम या समाप्त, पटाखा फैक्ट्री में सैकड़ों कर्मचारियों की घटनाओं में मृत्यु हो जाती है।


संपादक : विराग शास्त्री

# ौतना के सदस्य बनिये

ण्डेशन रजि., सर्वोदय 702, फूटाताल, जबलपुर मो.9300642434

लगाकर अहिंसा अभियान में सहभागी बनें।

# कथा सुनो पुराण की : अभयकुमार

मगध राजधानी गिरिव्रज में महाराज श्रेणिक राज्य करते थे। एक घटना के बाद उन्होंने एक भील की बेटी तिलकवती से विवाह किया। श्रेणिक का पहली पत्नी से एक पुत्र बिंबसार पहले से था इसलिये तिलकवती के पिता ने विवाह इस शर्त पर किया कि महाराज श्रेणिक तिलकवती से होने वाले पुत्र को ही मगध का राजा बनायेंगे। समय पाकर तिलकवती ने एक पुत्र को जन्म दिया, उसका नाम चिलाती रखा।

अपने वचन को निभाने के लिये राजा ने अपने बड़े पुत्र बिंबसार पर झूठे आरोप लगाकर राजधानी से बाहर निकाल दिया। बिंबसार राजधानी से बाहर नन्दिग्राम पहुँचे। वहाँ एक गांव के प्रमुख नन्दिनाथ ने उन्हें भोजन न देकर आगे जाने को कहा। वहाँ उन्हें एक सेठ इन्द्रदत्त नाम का व्यक्ति मिला। वे इन्द्रदत्त के साथ उसके घर जाने लगे। रास्ते में बिंबसार ने सेङ्ठ से पूछा - नन्दिग्राम गांव बसा हुआ या उजड़ा है ? सेठ को आश्चर्य हुआ कि कैसा व्यक्ति है, जो बसे गांव को देखकर भी पूछ रहा है। आगे जाने पर देखा कि एक पुरुष अपनी पत्नी को मार रहा था। थोड़ा आगे जाने पर बिंबसार ने सेठजी से पूछा कि वह व्यक्ति अपनी बंधी हुई स्त्री को मार रहा था या खुली हुई को ? सेठ चुप रहा। कुछ दूर जाने पर एक किसान को अपने खेत में हल चलाते देखा तो राजकुमार ने पूछा कि ये किसान अपनी फसल खा चुका है या खायेगा ? सेठ सोचने लगा कि कैसा अजीब प्रश्न है, अरे जब खेत जोतेगा, फसल होगी तभी तो खायेगा। ये युवक बेकार का प्रश्न पूछता है। आगे जाने पर रास्ते में बालू (रेत) बहुत थी तो राजकुमार ने जूते उताकर अपने हाथ में ले लिये और चलने लगा पर सेठ ने जूते नहीं उतारे। आगे चलने पर एक नदी आई तो सेठ ने अपने जूते उतारकर अपने हाथ में ले लिये परन्तु राजकुमार ने जूते पहनकर नदी पार की। सेठ ने समझ लिया कि यह युवक मूर्ख है। नदी पार करने के बाद वे एक बाग में पहुँचे तो सेठ ने युवक से कहा - सुनो! मैं इसी नगर में रहता हूँ।

तुम थोड़ी देर पेड़ के नीचे आराम करो, मैं घर पर जाकर तुम्हें बुलवा लूँगा। राजकुमार ने अपना छाता खोला और पेड़ की छाया में बैठ गया। अब सेठ को पक्का विश्वास हो गया कि यह युवक पक्का मूर्ख है।

सेठ अपने घर पहुँचे तो सेठ की पुत्री नन्दिश्री ने पूछा - पिताश्री! आप अकेले आये हैं या कोई साथ भी आया है ? सेठ इन्द्रदत्त ने कहा - बेटी! मैं अकेला नहीं, एक युवक के साथ आया हूँ। उस युवक के चेहरे की आभा तो राजकुमार जैसी है पर बातें मूर्खों की तरह करता है। तब नन्दिश्री के पूछने पर सेठ ने सारी घटना सुनाई तो पुत्री बोली - जिसे आप मूर्ख समझ रहे हैं वह अत्यंत बुद्धिमान व्यक्ति है।

जिस गांव में भोजन नहीं मिला तो वह गांव उजड़ा हुआ ही है, जो पुरुष अपनी पत्नी को मार रहा था यदि वह समझदार हुई तो अपनी गल्ती को मानकर अपने पति के साथ ही रहेगी और छल कपट वाली हुई तो भाग जायेगी। किसान ने यदि पहले से कोई उधार ले रखा होगा तो वह फसल पहले ही खा चुका है क्योंकि फसल होने पर उसे पहले कर्ज चुकाना होगा। इसी तरह रेत तो वैसे ही ठंडक प्रदान करती है और जूते में धूल न जाये तो जूते उतार दिये। नदी में कंकर-पत्थर से बचने के लिये जूते नहीं उतारे और पेड़ के नीचे छाता इसलिये लगाया जिससे पक्षियों की बीट से सिर बचा रहे।

इसके बाद नन्दिश्री ने अपनी दासी को बुलाया। दासी के नाखून बहुत लंबे थे। उसने दासी को नाखूनों को तेल में लगाकर राजकुमार के पास जाने के लिये कहा और कहा कि उस युवक को कहना कि पिताजी ने बुलाया है। उसे घर का पता न बताकर कान दिखलाकर आ जाना। दासी ने राजकुमार के पास जाकर अपने नाखून और कान दिखाकर घर आने के लिये कहा। राजकुमार ने आभास हो गया कि कान (ताड़ - नारियल) का वृक्ष वाला ही घर सेठ का घर होगा। ऐसा सोचकर उसके घर चला गया। घर के बाहर बहुत कीचड़ था वे कीचड़ में पैर रखकर अंदर आ गये। तब नन्दिश्री ने उनका स्वागत किया और आधा गिलास पानी पैर धोने के लिये दिया। राजकुमार समझ गये कि उनकी परीक्षा ली जा रही है। आधे गिलास पानी से पैर साफ कैसे होता तो उन्होंने पहले लकड़ी से पूरा कीचड़ निकाला फिर उस पानी से पैर धो लिये। नन्दिश्री स्वयं बुद्धिमान थी तो वह राजकुमार को देखकर समझ गई कि यह युवक असाधारण विद्वान है।

नन्दिश्री मन ही मन उससे विवाह की इच्छा करने लगी। नन्दिश्री ने राजकुमार से भोजन का आग्रह किया तो राजकुमार बिंबसार ने भी नन्दिश्री की परीक्षा करने की इच्छा से नन्दिश्री से कहा - मैं किसी के यहाँ भोजन नहीं करता। मेरे पास ये 32 चावल हैं, इन्ही से भोजन बना दें तो मैं खा लूँगा। बुद्धिमान नन्दिश्री राजकुमार की भावना समझ गई। उसने उन चावलों को पीसकर पाँच छोटे रसगुल्ले बनाये और अपनी दासी से बोली - बाजार जाकर यह

कहकर बेच देना कि यह मंत्र वाले रसगुल्ले हैं, जिसे खिलाया जायेगा वह अपने वश में हो जायेगा। वे रसगुल्ले बाजार में अच्छी कीमत पर बिक गये। फिर उस रुपये भोजन सामग्री मंगाकर भोजन तैयार किया। राजकुमार वहीं रहने लगा। एक दिन सेठ ने अपनी पुत्री से कहा कि मुझे पता चल गया है कि यह युवक साधारण व्यक्ति नहीं बल्कि मगध के राजा श्रेणिक का पुत्र बिंबसार है।

दूसरे दिन सेठ ने बिंबसार से कहा कि मुझे आपकी सही जानकारी मिल गई है। आप मेरी पुत्री से विवाह करें और मैं आपके अधिकार को वापस दिलवाने में आपकी पूरी सहायता करुँगा। राजकुमार बिंबसार ने नन्दिश्री से विवाह कर लिया और कुछ समय बाद उनका एक पुत्र हुआ जिसका नाम रखा गया - अभयकुमार।

आगे की कहानी बहुत रोचक और ज्ञानवर्द्धक है।

- शेष कहानी अगले अंक में

## कानजी स्वामी प्रभावशाली व्यक्तित्व : आचार्य शांतिसागर जी

इस युग के प्रथम दिगम्बर मुनि और आचार्य शांतिसागरजी गुजरात विहार कर रहे थे तो आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी के अनुरोध पर सोनगढ़ गये। सोनगढ़ में उस समय 25000 साधर्मियों का समुदाय था। आचार्य शांतिसागर का भव्य स्वागत किया गया। उस समय आचार्य शांतिसागरजी ने अपने उद्बोधन में कहा कानजी स्वामी के प्रभाव से हजारों श्वेताम्बर भाईयों - बहनों ने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया है और वे जैन धर्म के सच्चे उपासक बन गये हैं।

इस प्रकार कानजी स्वामी के स्पर्श से उनका जीवन स्वर्ण बन गया है। उनसे ब्रह्मचर्य व्रत लेकर अनेकों भाई-बहिनों का जीवन सफल हुआ है।

उनका यह प्रसंग प्रेरणादायी है।

**- आचार्य शांतिसागर जन्मशताब्दी स्मृति ग्रंथ पृष्ठ 162 से साभार**

# एक जीवंत प्रेरणा

मुझे आश्चर्य हुआ जब करेली में दशलक्षण पर्व के दौरान मैंने व्हील चेयर पर बैठी एक महिला को समयसार गाथा पद्यानुवाद पढ़ते हुये देखा। पूछने पर पता चला कि इस महिला का नाम रानी जैन है। बचपन में ही रीढ़ की हड्डी में समयस्या थी। बढ़ती उम्र के साथ हड्डी टेढ़ी होती गई और रानी बचपन में ही व्हीलचेयर पर आ गई। उस समय तक इस धर्म की कोई रुचि नहीं थी। किन्तु ऐसी अवस्था होने पर करेली निवासी पण्डित मनोजजी शास्त्री की प्रेरणा से स्वयं ही व्हील चेयर चलाकर मंदिर जाना प्रारंभ कर दिया और साथ ही प्रतिदिन पूजन और स्वाध्याय करने लगी।

वर्तमान में रानी की उम्र 45 वर्ष है। उसे इस अवस्था में लगभग 25 वर्ष हो गये हैं। रीढ़ की हड्डी पूरी तरह टेढ़ी है, वह बहुत अस्पष्ट बोल पाती है, मुश्किल से सुन पाती है, हाथ-पैर बहुत कम काम करते हैं। निरन्तर शारीरिक और मानसिक पीड़ा से पीड़ित रहती है। किन्तु ऐसी स्थिति में भी रानी ने पंचपरमागम समयसार आदि ग्रन्थों के हिन्दी पद्यानुवाद याद किये हैं। साथ ही अनेक पूजन, संस्कृत व हिन्दी के पाठ व सैकड़ों आध्यात्मिक रचनायें याद कीं हैं। वह अपने पूर्व में किये गये पापों के उदय का विचार करके सावधान होकर धर्म में ही समय व्यतीत कर रही है।

जब मैंने रानी से पूछा कि इतना कैसे पढ़ लेती हो तो अपनी अस्पष्ट वाणी में बोली - पढ़ेंगे नहीं तो आर्त ध्यान होगा और पाप में ही मन जायेगा। उसके इस उत्तर ने मेरे मन को उसके सम्मान में झुका दिया। ऐसी शारीरिक, मानसिक वेदनाओं के बीच भी कोई इस तरह धर्म में लगकर साववधान रहे यह सच में हम सबके लिये एक जीवंत प्रेरणा ही है।

**- डॉ. ऋषभ जैन (शास्त्री), दिल्ली**

# मुनिराज को समवशरण में पहुँचाईये

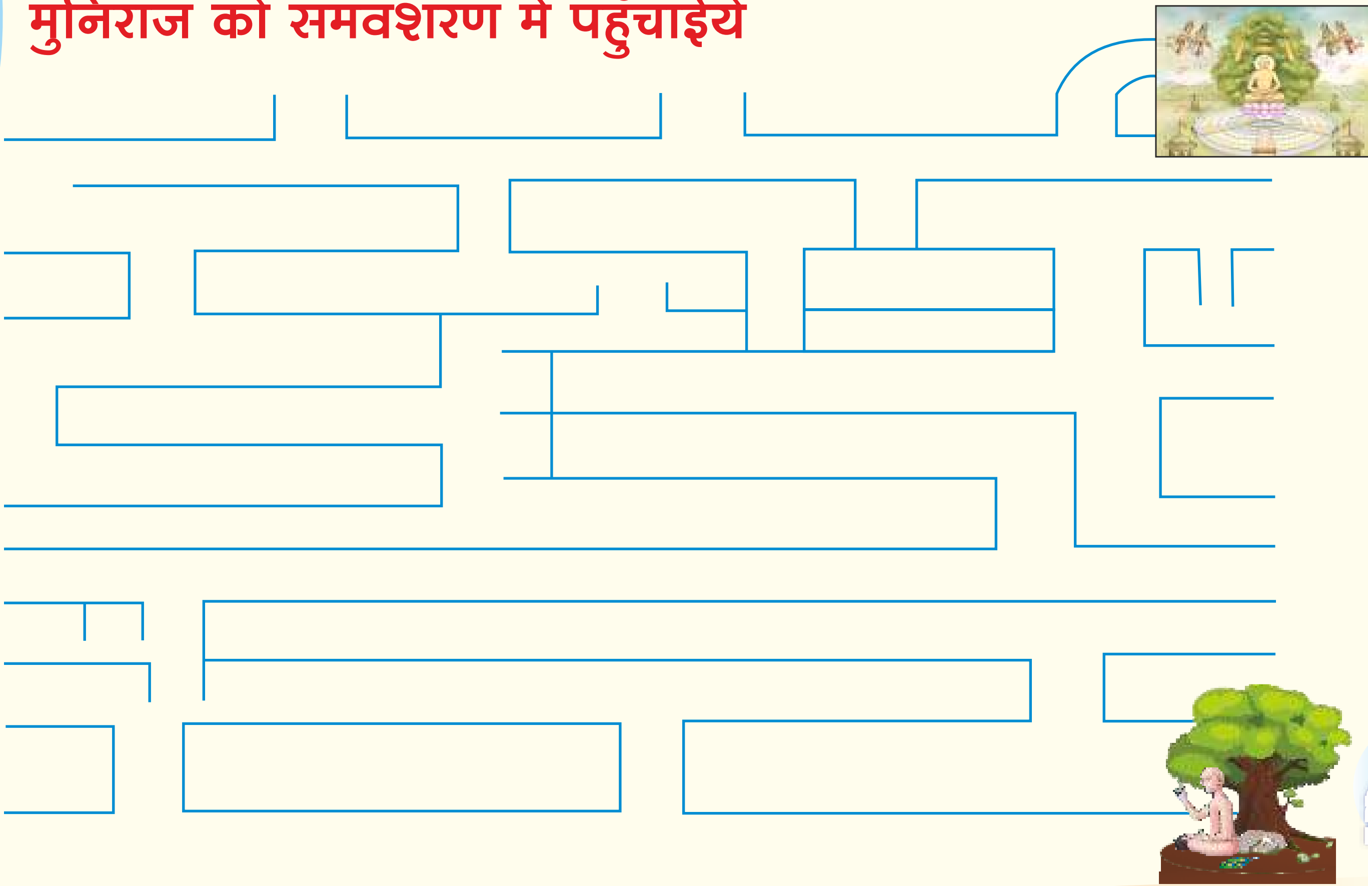

# आपके प्रश्न- आगम के उत्तर

**प्रश्न -1. यदि हम किसी जीव को छिपकली से बचायें और उसकी रक्षा करें तो इसमें हमें पुण्य मिलेगा या पाप हमने तो छिपकली के भोजन में अंतराय डाला है ?**

**उत्तर -** आप किसी जीव को छिपकली से बचाने की अपेक्षा ऐसा प्रयास करें कि छिपकली के सामने जीव ही न आये तो ज्यादा अच्छा रहेगा या छिपकली घर में ही न आये ऐसा कोई उपाय करें और आपका अभिप्राय बचाने का है छिपकली को भूखा रखने का नहीं तो पुण्य ही लगेगा।

**प्रश्न - 2. एक तीर्थंकर के साथ अनेक करोड़ मुनिराज मोक्ष गये? इतने सारे मुनिराजों का मोक्ष जाना कैसे संभव है ?**

**उत्तर -** एक साथ जाने का मतलब एक ही समय में नहीं बल्कि उन तीर्थंकर के काल में या उनके बाद होने वाले तीर्थंकर के पहले तक का समय में मोक्ष गये।

**प्रश्न - 3. तीर्थंकर के मोक्ष जाने के बाद उनके पद चिन्ह कैसे बन जाते हैं ?**

**उत्तर -** जिस स्थान से तीर्थंकर का निर्वाण होता है वहाँ इन्द्र वज्र के द्वारा स्वस्तिक का निर्माण कर देता है। परन्तु सम्मेदशिखर के पर्वत में जो चरण चिन्ह हैं वे बाद में समाज द्वारा बनाये गये हैं।

**प्रश्न - 4. क्या यमराज होते हैं ?**

**उत्तर -** यमराज नाम का कोई देवता नहीं होता। जन्म और मृत्यु एक स्वाभाविक प्रक्रिया है। हम अपनी आयु से ही जन्म लेते हैं और अपनी आयु पूरी होने पर मरते हैं। कोई यमराज किसी को नहीं मारता।

**प्रश्न - 5. क्या दीपावली में रात्रि पूजन कर सकते हैं ?**

**उत्तर -** दीपावली में ही नहीं बल्कि कभी भी रात्रि में पूजन करने का पाप है। जैसे रात्रि भोजन त्याग जैसा ही नियम पूजन के साथ लागू होता है।

**प्रश्न - 6. पर्वत पर विराजमान जब मुनिराज मोक्ष चले जाते हैं तो उनके शरीर का क्या होता है ?**

**उत्तर -** तीर्थंकरों और केवली भगवान के निर्वाण के सम्बन्ध में तीन प्रमाण मिलते हैं। 1. जैसे ही भगवान को मोक्ष होता है उनका शरीर कपूर की तरह गायब हो जाता है। तब देवगण आकर माया से शरीर बनाकर पालकी में विराजमान करते हैं और महोत्सव मनाते हैं फिर उसका अंतिम संस्कार करते हैं। 2. आचार्य पूज्यपाद के अनुसार भगवान के निर्वाण के बाद उनका शरीर ज्यों का त्यों बना रहता है और उसका अंतिम संस्कार देवगण करते हैं। 3. प्रवचनसार की टीका में उल्लेख है कि भगवान का सम्पूर्ण शरीर नष्ट हो जाता है। केवल नाखून और बाल शेष रहते हैं जिसका अंतिम संस्कार देव करते हैं।

**प्रश्न - 7. जिसके पास अधिक धन वैभव हो तो क्या वह परिग्रही है ?**

**उत्तर -** नहीं। जिसे धन और वैभव के प्रति ममता है वह परिग्रही है। गरीब भी परिग्रही हो सकता है और धनवान भी अपरिग्रही।

# विदेशों में जैन धर्म -

## रोम में जैन धर्म का प्रभाव

एक समय ऐसा था कि सम्पूर्ण विश्व जैन था। सम्पूर्ण विश्व में एक मात्र जैन धर्म की आराधना होती थी। जैन आगम से तो यह बात सहज सिद्ध है परन्तु अन्य प्रमाणों से भी स्पष्ट होता है कि जैन धर्म सम्पूर्ण विश्व के कोने-कोने में फैला हुआ था।

**रोम में जैन धर्म -** रोम में भी सन्यास की परम्परा थी। लगभग सातवीं शताब्दी में सन्यास की परम्परा का अधिक प्रचार हुआ। उस समय जैन मुनि भी दूर देशों में विहार किया करते थे। ईसा से 25 वर्ष पूर्व पाण्ड्य के राजा अगस्टस सीजर के दरबार में दूत भेज थे। उनके साथ जैन मुनि भी यूनान गये थे।

प्रसिद्ध लेखक श्री विशम्भरनाथ पांडे ने लिखा है कि इन जैन साधुओं के त्याग का प्रभाव यहूदी धर्म मानने वालों पर विशेष रूप से पड़ा। ऐसा आचरण करने वाले यहूदियों को एक अलग वर्ग बन गया जिसे 'ऐस्मिनी' कहा जाता था। ये गांव से दूर जाकर या पहाड़ों पर झोपड़ी बनाकर रहते थे। जैन मुनियों की तरह अहिंसा का आचरण अपनाते थे। वे बिल्कुल भी मांस नहीं खाते थे और कङ्गेर व संयमी जीवन व्यतीत करते थे। पशुबलि का बहुत विरोध करते थे। वे अपरिग्रह के सिद्धान्त को मानते थे और कम से कम वस्तुओं से संतुष्ट रहते थे। वे अपनी सम्पत्ति को समाज की सम्पत्ति कहते थे। मिस्र में इन्हीं तपस्वियों को 'थेरापूते' कहा जाता था, थेरापूते का अर्थ मौनी अपरिग्रही है। वे प्राचीन यहूदी वास्तव में भारतीय इक्ष्वाकु वंश के जैन थे, इसी इक्ष्वाकु वंश में भगवान महावीर का जन्म हुआ था। यहूदी जुदिया में रहने के कारण यहूदी कहलाते थे।

भगवान महावीर जब भारत के अनेक नगरों में विहार कर रहे थे तब उनकी प्रसिद्धि दूर - दूर के देशों में भी फैली। भगवान महावीर के तप के बारे में सुनकर उस समय के ईरान के राजा अरदराक भारत आये और भगवान महावीर का उपदेश सुनकर उनके शिष्य बन गये। उन्होंने ही ईरान में अहिंसा का प्रचार किया। महावीर की अहिंसा का संदेश फिलिस्तीन, मिस्र और यूनान तक पहुँचा। यूनान में पाइथागोरस ने जैन धर्म का प्रचार किया। कुछ विद्वानों का मानना है कि पाइथागोरस एक जैन मुनि थे जिनका नाम पिहितास्रव

मुनि था। वे ग्रीक विद्वान थे। मिस्र में जैन साधुओं के उपदेश सुनकर वहाँ की जनता शाकाहारी हो गई। मिस्र में पैगम्बर मुहम्मद के समय अनेक जैन मंदिर विद्यमान थे। मिस्र और यूनान में भगवान ऋषभदेव की प्राचीन प्रतिमायें प्राप्त हुईं हैं। प्रोफेसर ए. चक्रवर्ती के अनुसार ईरान में जैन धर्म का बहुत प्रचार रहा है।

**तिब्बत जैन धर्म का प्रभाव -** एक यात्रा विवरण के अनुसार तिब्बत के एरुल नगर में एक जैनी राजा का राज्य था। यहाँ के जैनी मावरे जाति के थे। एरुल नगर में एक नदी के किनारे हजारों जैन मंदिर थे। यहाँ सोलहवें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के जन्म, दीक्षा और निर्वाण कल्याणक पर बहुत दूर-दूर यात्री तीर्थ यात्रा करने आते थे। नदी के किनारे सुनहरे पत्थरों वाला सुमेरू पर्वत बना हुआ था।

तिब्बत में सोहना जाति के जैन भी थे। तिब्बत के खिलवन नाम के नगर में 104 शिखरबंद जैन मंदिर थे। साथ ही नन्दीश्वर की रचना वाले 52 चैत्यालय भी थे। दक्षिणी तिब्बत के हनुवर नाम नगर में जैनों के अनेक गांव थे जिनमें बहुत से जिनमंदिर थे।

**इथोपिया में जैन धर्म -** ग्रीक इतिहासकार हेरोडंटस ने माना है कि इोपिया में जैन धर्म के मानने वाले हजारों लोग थे। इतिहासकार पण्डित सुन्दरलाल ने अपनी पुस्तक ईसा और ईसाई धर्म में लिखा है कि उस जमाने के इतिहास से पता चलता है कि पश्चिमी एशिया, यूनान, मिस्र और इतोपिया के पहाड़ों और जंगलों में उन दिनों हजारों जैन संत और श्रावक विहार करते थे।

प्रसिद्ध जर्मन विद्वान वान क्रेमर के अनुसार मध्य पूर्व एशिया में प्रचलित समानिया सम्प्रदाय श्रमण जैन सम्प्रदाय था। प्रसिद्ध विद्वान जी.एफ.मूर ने लिखा है कि ईराक, फिलिस्तीन और तुर्किस्तान आदि में हजारों जैन मुनि जैन धर्म का प्रचार किया करते थे जो कि अपने त्याग और ज्ञान के लिये प्रसिद्ध थे।

**मिस्र में जैन धर्म -** विश्व की प्राचीन सभ्यताओं में से मिस्र की सभ्यता अत्यंत प्राचीन है। सर फिलंडर्स पैट्री ने अपनी खोज और प्रमाण के आधार पर लिखा कि मिस्र की प्राचीन मिस्र में ईसा से 590 वर्ष पूर्व भारतीय बस्ती थी। राजधानी मैक्फिस में मिली प्राचीन प्रतिमाओं में से एक प्रतिमा पद् मासन मुद्रा में बैठे जैन तीर्थंकर की ही है। एक लेखक ने यहाँ घूमने के बाद लिखा कि मिस्र की एक पहाड़ी पर ऐसी प्रतिमायें देखीं हैं जो गिरनार तीर्थ की प्रतिमाओं से मिलतीं जुलतीं हैं। मिस्र के अपने देवता होरस की दिगम्बर मुद्रा की प्रतिमायें बनाकर पूजते थे। यहाँ के लोग शुद्ध शाकाहारी और अहिंसा वादी थे।

अनेक प्रमाणों से सिद्ध होता है कि हमारा गौरवशाली जैन धर्म विश्व के लगभग सभी देशों में था।

**इसकी और चर्चा अगले अंक में प्रकाशित की जायेगी।**

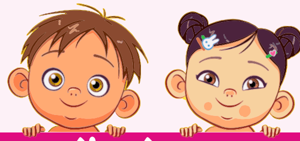

# नाम रखें सोच समझकर

आजकल बच्चों के नये नाम रखने का ट्रेंड चल रहा है। हर माता-पिता अपने बच्चे का ऐसा नाम रखना चाहते हैं जो यूनिक हो और उसका नाम किसी दूसरे न मिलता हो। इस होड़ में बच्चों के ऐसे नाम रख लेते हैं जिनका कोई अर्थ ही नहीं निकलता और कई नाम तो ऐसे होते हैं जिनका अर्थ तो न बच्चे को पता है और न माता-पिता। नये नामों की खोज में गूगल देवता की शरण ली जाती है और गूगल के अधकचरे ज्ञान से कोई अद्‌भुत सा लगने वाला नाम पसंद आ जाता है और पूरा परिवार खुश।

एक सज्जन ने अपने बेटी का नाम 'अवीरा' बताया तो उनसे इसका अर्थ पूछा तो कहने लगे - अवीरा का अर्थ है - बहादुर, ब्रेव, कॉन्फिडेंशियल। यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि उन्हें अवीरा का सही अर्थ नहीं पता जबकि 'अवीरा' का अर्थ होता है जिस स्त्री के पुत्र या पति न हों अर्थात् पुत्र या पति रहित स्त्री। यह सुनकर वे दुखी हो गये कहने लगे कि अब क्या करें? बर्थ सर्टिफिकेट में और स्कूल में यही नाम है। आजकल कुछ नया के चक्कर में सब अनर्थ हो रहा है। लड़का हो तो वियान, कियान, वेनिश, केयांश आदि और लड़की हो तो मियारा, कियारा, नयारा, मायरा, अलमीरा और अर्थ पूछा तो इट मीन्स रे ऑफ लाइट, सन ऑफ गॉड, ब्राइट स्टार। नाम के यूनिक रखने के फैशन के दौर में एक सज्जन ने अपनी बेटी का नाम 'श्लेष्मा' रखा। जब उनसे पूछा कि आपने अपनी बेटी का नाम कुछ अच्छा अर्थ सोचकर रखा होगा तो बड़े उत्साह से बोले - हाँ बिल्कुल। श्लेष्मा का अर्थ होता है कि जिस पर माँ की कृपा हो। पूछने वाला सज्जन आश्चर्य से सिर पकड़कर बैङ्ग गया तो उन्हें आभास हो गया कि लगता है यह अर्थ सही नहीं है। तो उन्होंने सही अर्थ बताया कि श्लेष्मा का अर्थ होता है नाक का मैल।

इस मामले में आज समाज की स्थिति बहुत दयनीय है। संस्कृत अथवा हिन्दी साहित्य के शब्द वैभव से अपरिचित लोग अर्थहीन, बेढ़ंगे और अनर्थक नाम रखकर बच्चों को भी शर्मनाक स्थिति में पहुँचा देते हैं।

स्मृति संग्रह में बताया है कि व्यवहार की सिद्धि, आयु एवं प्रभाव के लिये श्रेष्ठ नाम होना चाहिये। नाम सदा मंगल सूचक, आनंद सूचक होना चाहिये। बच्चों के नाम लेकर पुकारने से उसके मन में उस नाम का बहुत असर पड़ता है। हमारे जैन धर्म में हजारों ग्रन्थ संस्कृत प्राकृत में हैं जिसमें हजारों सुन्दर नाम मिलते हैं जिनका अर्थ शुभ और मंगलकारी होता है। नाम के बहाने ही जिनागम के शब्दों का स्मरण हो जाता है।

ऐसे नाम भी न रखें जिनके उच्चारण से धर्म का स्पष्ट अविनय हो। जैसे किसी का जिनवाणी रखा। तो यही कहने में आयेगा कि जिनवाणी रो रही है, जिनवाणी को गुस्सा आ गया, जिनवाणी चाट पकौड़ी खा रही है। इस तरह से तो जिनवाणी की अविनय ही हुई। इसलिये नाम सुन्दर, सार्थक और जिनधर्म से सम्बन्धित हों - यही श्रेष्ठ परम्परा है।

# चहकती चेतना 2024-25
## के नये कलेण्डर के लिये विज्ञापन आमंत्रित

विगत 16 वर्षों से अनवरत प्रकाशित लोकप्रिय बाल-युवा पत्रिका चहकती चेतना का रंगीन केलेण्डर शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा है। विगत लगभग 6 वर्षों से प्रकाशित होने वाला यह केलेण्डर प्रतिवर्ष की पद्धति की तरह अप्रेल 2024 से मार्च 2025 तक की तिथियों वाला होगा। प्रतिवर्ष नई थीम के साथ प्रकाशित होने वाले इस केलेण्डर को ज्ञानवर्द्धक बनाने के साथ - साथ विशेष पर्व, तीर्थंकरों के पंचकल्याणक तिथि, प्रमुख आध्यात्मिक आयोजन की तिथियों से समायोजित किया जायेगा। यह केलेण्डर 3000 प्रतियों के साथ प्रकाशित होता है और सम्पूर्ण देश के अध्यात्म प्रेमियों तक निःशुल्क पहुँचाया जाता है।

इस केलेण्डर के प्रकाशन आप भी अपने फर्म, प्रतिष्ठान, संस्था या परिवार की ओर से एक पेज का विज्ञापन प्रकाशित करवाकर सहयोग प्रदान कर सकते हैं। विज्ञापन देने के लिये आप संपादक श्री विराग शास्त्री से 9300642434 पर संपर्क कर सकते हैं।

## उदयपुर में आयोजित तृतीय जिनदेशना यूथ कन्वेंशन युवाओं के लिये संजीवनी बना

युवा वर्ग में जिनधर्म की रुचि जाग्रत करने के प्रयास के अंतर्गत विगत वर्ष से आयोजित हो रहे जिनदेशना यूथ कन्वेंशन युवाओं के लिये आकर्षण के साथ प्रेरणा का कार्य कर रहे हैं। इस कार्यक्रम की श्रृंखला का तीसरा कार्यक्रम उदयपुर के विख्यात संस्थान संस्कार तीर्थ शाश्वतधाम में संपन्न हुआ। दिनांक 8 सितम्बर से 10 सितम्बर तक आयोजित इस कार्यक्रम में लगभग 6 राज्यों के युवा साधर्मी पूरे उत्साह से शामिल हुये। युवा विद्वान श्री संजयजी शास्त्री कोटा, श्री विपिन शास्त्री नागपुर, श्री अभय शास्त्री खैरागढ़ और श्री अनुभवजी करेली ने अपनी विशिष्ट शैली एवं रोचक विषयों से युवा वर्ग का मन मोह लिया। प्रातः 6.15 से रात्रि 10 बजे तक अनवरत चलने वाले कार्यक्रम में युवाओं ने भरपूर लाभ लिया। कार्यक्रम के मध्य में श्री आर्जव संजीवजी गोधा का एक व्याख्यान हुआ।

कार्यक्रम का आयोजन श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, विलेपारला, मुम्बई की ओर से किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित राजकुमारजी शास्त्री के मागदर्शन, श्री विराग शास्त्री के अनुभवी मार्गदर्शन, डॉ. अंकित शास्त्री लूणदा और श्री अमित अरिहंत भोपाल के संयोजन में संपन्न हुआ। कार्यक्रम में श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट, शाश्वतधाम के ट्रस्टियों का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ।

**- श्री भावेश कालिका,** महामंत्री - शाश्वत धाम

## तीर्थधाम ज्ञानोदय में दूसरा जिनदेशना यूथ कन्वेंशन सफलता के साथ सम्पन्न

युवा वर्ग को जिनधर्म के सैद्धान्तिक वैभव से परिचित कराने और जिनधर्म में रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई के तत्वावधान में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन ज्ञानोदय ट्रस्ट भोपाल द्वारा आयोजित द्वितीय जिनदेशना यूथ कन्वेंशन का आयोजन सफलतापूर्वक भोपाल के नजदीक तीर्थधाम ज्ञानोदय में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। दिनांक 12 अगस्त से 15 अगस्त 2023 तक आयोजित इस कार्यक्रम में देश के विभिन्न नगरों के लगभग 300 युवाओं ने सहभागिता की। इस कार्यक्रम में श्री संजय शास्त्री कोटा, डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ और श्री विपिन शास्त्री नागपुर ने अपनी विशिष्ट और सरलतम शैली में जिनधर्म का मर्म बताया। कार्यक्रम में प्रतिदिन जिनेन्द्र अभिषेक, पूजन-विधान, पूज्य गुरूदेवश्री के सीडी प्रवचन, विद्वानों के व्याख्यान के साथ प्रतिदिन पण्डित संजयजी शास्त्री के आध्यात्मिक आनंद यात्रा के कार्यक्रम हुये। एक दिन आयोजित प्रश्न आपके - समाधान जिनवाणी के कार्यक्रम में युवाओं की अनेक शंकाओं के समाधान किये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में तीर्थधाम ज्ञानोदय में अध्ययनरत छात्रों द्वारा कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य कुन्दकुन्द नाटक की प्रभावशाली प्रस्तुति एवं आध्यात्मिक भजन रचनाकार एवं गायक आत्मार्थी विद्वान श्री संजीवजी दिल्ली की भजन संध्या ने मन मोह लिया। कार्यक्रम का निर्देशन श्री विराग शास्त्री एवं संयोजन श्री अमित अरिहंत एवं पण्डित शुभम शास्त्री ने किया। ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री अशोकजी ने सभी विद्वानों, सहयोगियों और श्रोताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में वरिष्ठ विद्वान ब्र. हेमचंदजी हेम के साथ भोपाल के सभी शास्त्री विद्वानों की गरिमामय उपस्थिति रही।

**चहकती चेतना के लिये सहयोग प्राप्त :**

- **11000/-** श्री आलोक धनेशचंदजी जैन, करहल जि.मैनपुरी
- **5100/-** श्री सेवंतीभाई गांधी, अहमदाबाद
- **5100/-** श्री सुनील जी वस्त्रापुर
- **1100/-** श्रीमति वैशाली विशाल शाह वस्त्रापुर, अहमदाबाद

## क्रोध

क्रोध महा शैतान है, खाता सारा ज्ञान है।
क्रोध शांति का दुश्मन है, करता घर में अनबन है।
क्रोधी व्यक्ति सदा दुखी, पाता नहीं कभी खुशी।।
क्रोध बढ़े तब चुप्प रहो, अपने में ही गुप्प रहो।

प्रसांगिक कविता :

# ये कैसा त्यौहार....

एक दिवस बोले सब प्राणी
अपने साथी संग से
घर से बाहर नहीं निकलना
बचना चाहो मौत से
खटमल, मच्छर कांपे
गाय बैल पशु भैंस भी
कीड़े थर-थर कांप रहे थे
भाग रहे थे सांप भी
कॉकरोच तो रोता फिरता
करे विनय भगवान से
मुझे बचा लो दयानाथ जी
मुझे प्रेम है प्राण से
चेतन भैया पूछे उससे
कहो आज क्या बात है क्या
कोई प्रलय आ गया
या आया यमराज है
कॉकरोच घबराता बोला -
चेतन भैया! क्या बतलाऊँ
सर पर मौत सवार है
वीर प्रभु निर्वाण महोत्सव
दीवाली त्यौहार है
कॉकरोच! तू नहीं जानता

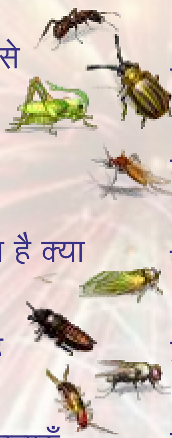

यह तो पर्व महान है
जियो और जीने दो कहने वाले
महावीर भगवान हैं
सत्य अहिंसा के उद्घोषक
का निर्वाण महान है
निर्भय होकर रहो जगत में
तू इससे अनजान है।
कॉकरोच फिर से यूं बोला -
नहीं समझते यही बात तो
महावीर की जय कहते
पटाखे के जलने से
या उसकी आवाज से
जल जाते या मर जाते हम
भाग रहे यमराज से
हम निर्दोष हैं छोटे प्राणी
जीने का अधिकार है
प्राण नहीं दे सकते तो
मारने का क्या अधिकार है ?
जल जाओ अग्नि से थोड़ा भी
दुख कितना तुम पाते हो
हम प्राणी का नहीं मूल्य क्या
जो हमको यूं ही जलाते हो
ध्यान रहे ये बात मेरी सुन
जो भी पटाखे जलायेंगे
काल अनंत तक रोयेंगे वे
कभी सुखी न हो पायेंगे।

**- विराग शास्त्री, जबलपुर**

# प्लास्टिक का बढ़ता प्रयोग : धरती का संकट

बाजार सब्जी लाना हो या फिर किराने का सामान या फिर और कुछ, पॉलिथिन के बिना काम नहीं चलता। बाहर ही नहीं, घर के अंदर भी प्लास्टिक की बोतल में रखा पानी ही प्यास बुझा रहा है। किचन में मौजूद अधिकांश डिब्बे प्लास्टिक से ही बने हैं। स्टेशनरी या चम्मच, प्लेट, फर्नीचर और जूते-चप्पल शायद ही कुछ बचा है, जहाँ प्लास्टिक का प्रयोग नहीं हो रहा लेकिन यही प्लास्टिक जहर बनकर खून में खुल रही है। आंखों से न दिखने वाले इसके कण किडनी और लीवर को नुकसान कर रहे हैं और कैंसर का कारण बन रहे हैं। प्लास्टिक इंसानों समेत पूरी धरती के लिये खतरा बन चुका है।

नीदरलैंड की यूनिवर्सिटी ऑफ एम्सटर्डम की एक रिसर्च में 80 प्रतिशत लोगों के खून में प्लास्टिक के कण मिले। 5 मिलीमीटर और इससे छोटे आकार के इन प्लास्टिक के कणों को माइक्रोप्लास्टिक कहते हैं। पानी की बोतल, पॉलीथिन, टूथब्रश और हवा तक के माध्यम से प्लास्टिक शरीर में पहुँच रहा है।

- हवा में मौजूद माइक्रोप्लास्टिक फेफड़ों और दिल से होते हुये खून में मिल जाते हैं।
- एक सप्ताह में 2 हजार प्लास्टिक के कण इंसान के शरीर में पहुँचते हैं।
- एक साल में एक व्यक्ति एक लाख माइक्रोप्लास्टिक खाने के साथ निगल जाता है।
- माइक्रो प्लास्टिक से लीवर, किडनी डैमेज हो सकती हैं और ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है।

**ये भी जानिये -**

- दुनिया भर में हर साल करीब 46 करोड़ टन प्लास्टिक का उत्पादन होता है।
- इसमें से करीब 35 करोड़ टन प्लास्टिक कुछ ही दिनों में कचरा बन जाता है।
- लगभग 2 करोड़ प्लास्टिक का कचरा हर साल झीलों, तालाबों, नदियों और समुद्र में फेंक दिया जाता है।
- समुद्र में पहुँचने वाले कचरे का 90 प्रतिशत हिस्सा प्लास्टिक वेस्ट होता है।
- भारत समेत दक्षिण एशियाई देशों से रोज 16000 टन प्लास्टिक वेस्ट समुद्र में फेंका जाता है।
- देश में हर साल 35 लाख टन प्लास्टिक कचरा निकलता है परन्तु इसका 30 प्रतिशत हिस्सा ही रिसाइकल हो पाता है।

- प्लास्टिक के बनी वस्तुओं के नष्ट होने में 800 से एक हजार वर्ष का समय लगता है। प्लास्टिक के कारण इतना कचरा इकट्ठा हो चुका है कि धरती को चार से पाँच बार आसानी से लपेटा हा सकता है।

एक शोध के अनुसार हर भारतीय साल भर में 15 किलो प्लास्टिक उपयोग के बाद फेंक देता है जिसकी वजह से चारों तरफ कचरे के पहाड़ खड़े हो रह हैं। हमें लगता है कि समस्या तो बहुत बड़ी है पर यह हम भूल जाते हैं कि इस समस्या के लिये हम भी जिम्मेदार हैं। हम भी कई बार अनावश्यक रूप से प्लास्टिक का दुरुपयोग करते हैं। प्लास्टिक सम्पूर्ण विश्व के लिये तो खतरा है ही परन्तु हमारे स्वास्थ्य के लिये भी बड़ा खतरा है। हम इस प्रकार पर्यावरण सुरक्षा में अपना योगदान दे सकते हैं -

1. बाजार सामान लेने जाते समय अपने घर से थैला लेकर जायें।
2. अनावश्यक प्लास्टिक के उपयोग से बचें।
3. पॉलीथिन के उपयोग के बाद उसे तालाब, नदी आदि में न फेकें।
4. दुनिया में रोज 1 करोड़ से ज्यादा प्लास्टिक की बोतल इस्तेमाल के बाद फेंक दी जातीं हैं। संभव हो तो बांस, ग्लास या मेटल से बनी बोतल अपनायें।
5. हर साल दुनिया भर में 500 अरब प्लास्टिक बैग इस्तेमाल के बाद कचरे के ढ़ेर में चले जाते हैं। इनकी जगह कपड़े के थैले का प्रयोग करें।
6. हर साल 15 करोड़ टन प्लास्टिक स्ट्रॉ, कटलरी जैसी सिंगल यूज चीजों में लग जाता है। अतः दोबारा यूज हो सकने वाली मेटल की चीजें यूज करें।
7. प्लास्टिक के डिब्बे छोड़ें और स्टील के डिब्बे लायें।

# कोई लाख करे चतुराई–कर्म का लेख मिटे न रे भाई

# सम्पन्न कार्यक्रमों की झलकियाँ

दशलक्षण महापर्व मलाड, मुंबई

# चहकती चेतना की ओर से प्रयास जोरदार

## पटाखे न फोड़ने वालों को मिलेगा

# आकर्षक पुरस्कार

विश्व में अहिंसा धर्म के प्रबल प्रचारक के रूप विख्यात भगवान महावीर का मंगलकारी निर्वाण महोत्सव आगामी 13 नवम्बर 2023 को आ रहा है। पर दुःखद तथ्य है कि अहिंसा के सम्राट के निर्वाण महोत्सव के दिन ही अनेक जैन साधर्मी और उनके बच्चे पटाखे फोड़कर अनंत जीवों की हिंसा करते हैं। वीर निर्वाण महोत्सव को अहिंसक रूप से भगवान महावीर की भक्ति के साथ मनाना चाहिये। लोकप्रिय बाल-युवा पत्रिका चहकती चेतना इस वर्ष पटाखे न फोड़ने वालों के लिये एक आकर्षक योजना प्रस्तुत कर रही है -

- **यह योजना 5 वर्ष से 18 वर्ष तक के बच्चों के लिये होगी।**
- **योजना में सहभागिता के लिये सर्वप्रथम आपको अपना नाम ऑनलाईन रजिस्टर्ड करना होगा। इसमें आपको अपना फोटो और आधार कार्ड भेजना होगा।**
- **रजिस्ट्रेशन के लिये आप अपना नाम लिखकर 9752756445 पर व्हॉट्सएप मेसेज कर फॉर्म लिंक प्राप्त करें।**
- **पटाखा नहीं फोड़ने वालों सभी बच्चों को संस्था द्वारा एक प्रमाण पत्र भेजा जायेगा। दीपावली के बाद निश्चित तिथि पर ऑनलाइन कार्यक्रम में ड्रा निकाला जायेगा और चयनित बच्चों को पुरस्कार भेजा जायेगा।**

**कुल-251 पुरस्कार**

| प्रथम पुरस्कार | द्वितीय पुरस्कार | तृतीय पुरस्कार | चतुर्थ पुरस्कार | पंचम पुरस्कार |
|---|---|---|---|---|
| सोने का सिक्का (1 Gram) | चाँदी के सिक्के | 40 आकर्षक गिफ्ट हेम्पर | 100 | 100 |

**आयोजक - चहकती चेतना पत्रिका एवं जिनेदशना**

## आपका साथ हमारा प्रयास - हो जिनधर्म का शंखनाद

**आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन जबलपुर**

आपकी यह संस्था विगत लगभग 17 वर्षों से बाल–युवा वर्ग में जिनधर्म के संस्कार प्रवाहित करने का प्रयास कर रही है। इस क्रम में तत्वप्रचार की नवीनतम विद्या का प्रयोग करते हुये जिनधर्म की कविताओं, कहानियों, गीतों के वीडियों का निर्माण किया गया। साथ ही रोचक धार्मिक गेम, कविताओं–कहानियों की चित्र सहित पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। बाल वर्ग में निरंतर धर्म की जाकिरियाँ प्रवाहित करने हेतु 2006 में चहकती चेतना पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका को पाठकों एवं अनेक विद्वानों का भरपूर प्यार और विश्वास प्राप्त हुआ है।

संस्था के पास जिनधर्म के प्रचार की अनेक योजनायें है आपका सहयोग मिलता रहेगा तो हम आगे भी समाज के लिये यह कार्य निरंतर करते रहेंगे। आशा है आपका सहयोग और विश्वास प्राप्त होगा। आप निम्न प्रकार से हमारा सहयोग कर सकते हैं।

शिरोमणि परम संरक्षक : 1 लाख रुपये। परम संरक्षक : 51 हजार रुपये
संरक्षक : 31 हजार रुपये । परम सहायक : 21 हजार रुपये। सहायक : 11 हजार रुपये।
सहायक सदस्य : 5 हजार रुपये। सदस्य : 1000 रुपये।

प्रत्येक सहयोगी को (सदस्य को छोड़कर) चहकती चेतना पत्रिका का आजीवन सदस्य बनाया जायेगा। संस्था द्वारा तैयार होने वाली समस्त सीडी और प्रकाशन आपको निःशुल्क भेजा जायेगा। आप अपनी सहयोग राशि आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर के नाम से चैक अथवा ड्राफ्ट के माध्यम से बनाकर भेजें।